e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| |e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' का प्रतीकात्मक अध्ययन

अनीता रानी धर्मपत्नी श्री सज्जन सिंह

हिसार(हरियाणा)

आधुनिक काल के प्रयोगवादी कवि सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन' अज्ञेय' श्रेष्ठ श्रेणी के कवियों में आते है। उन्होंने हिन्दी साहित्य में अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। उनके लेखन कार्य में 'असाध्य वीणा' एक प्रसिद्व कृति है; जिसे हम उसे जीवन के प्रतीकात्मक रूप में देख सकते है। अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' का प्रतीकात्मक अध्ययन करने से पूर्व प्रतीक के अर्थ, परिभाषा एवं सवरूप पा प्रकाश डाल लेते है।

प्रायः एक साहित्यकार अपनी पद्य या गद्य की विविध विधाओं में जीवन-दर्शन को परिभाषित करने या समाज में फैले भ्रष्टाचार, पूंजीपतियों तथा समाज के विभिन्न पहलुओं पर सीधे-सीधे कटाक्ष ना करके कुछ प्रतीकों का सहारा ले लेता है ताकि सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे, वहां प्रतीकात्मक भाव देखने को मिलता है। अर्थात् हमारी बात भी हो जाए और सामने वाले को बुरा भी ना लगे।

जर्मन लेखक जोहान वुल्फगैंग वॉन गोएथे ने प्रसिद्ध रूप से "सच्चे प्रतीकात्मकता" को परिभाषित किया "जिसमें विशेष सामान्य का प्रतिनिधित्व करता है।"

लियोनार्ड शेंगॉल्ड कहते हैं, "प्रतीकात्मकता और भाषा का उपयोग," हमारे दिमाग को समझने, मास्टर करने और विचारों और भावनाओं को संवाद करने के लिए पर्याप्त लचीला बनाता है।''

वर्ड ऑरिजिंस (1990) के शब्दकोश में जॉन आइटो ने बताया कि व्युत्पन्न प से एक प्रतीक कुछ है जो एक साथ फेंक दिया गया है। ' शब्द का परम स्रोत ग्रीक ृनउइंससमपद है 'फेंकने या

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

चीजों को एक साथ रखने' की धारणा 'विपरीत' की धारणा के कारण हुई, और 'तुलना' के लिए इतनी सुस्तता का उपयोग किया गया। इससे संबोलन प्राप्त हुआ था, जिसने 'पहचानने वाले टोकन' को दर्शाया था - क्योंकि इस तरह के टोकन की तुलना एक समकक्ष के साथ की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे वास्तविक थे और इसलिए किसी चीज़ का बाहरी संकेत'।'

"अल्फ्रेड नॉर्थ व्हाइटहेड के शब्दों में वह जीवन में प्रतीकात्मक तत्वों में एक उष्णकटिबंधीय जंगल में वनस्पति की तरह जंगली चलाने की प्रवृत्ति है। मानवता का जीवन आसानी से अपने प्रतीकात्मक सामान से अभिभूत हो सकता है प्रतीकवाद केवल निष्क्रिय कल्पना या भ्रष्ट अपमान नहीं है; यह मानव जीवन के बहुत बनावट में निहित है। भाषा ही एक प्रतीकवाद है।''

जो अदृश्य वस्तु जब किसी अगोचर या अदृश्य वस्तु के बहुत कुछ अनुरूप होने के कारण उसके गुण रूप आदि का परिचय कराने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करती हो उसके प्रतीक कहते हैं यानी कि वह वस्तु या व्यक्ति जो हमें दिखाई देता है वह दिखाई देने वाली वस्तु को कैसे समझाया जाता है। व्यापक रूप से, प्रतीकात्मक शब्द प्रतीकात्मक अर्थ या प्रतीकात्मक अर्थ के साथ चीजों को निवेश करने का अभ्यास हो सकता है। हालांकि अक्सर धर्म और साहित्य से जुड़े होते हैं, प्रतीकात्मकता रोजमर्रा की जिंदगी में प्रचलित है। प्रतीकात्मकता किसी ऑब्जेक्ट या एक्शन (प्रतीक) का उपयोग करने या किसी और चीज का सुझाव देने का किरीटी तरु परम सत्य का प्रतीक है। उससे बनाई गई वीणा सत्य की उपलब्धि का साधन मार्ग है और वीणा से निकलने वाला संगीत परमात्मा की अभिव्यक्ति है। यह सत्य प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भावनाओं के अनुसार उपलब्ध होता है।

'असाध्य वीणा' का आधार एक जापानी कथा है , जिसमें किरी नामक एक विशाल पवित्र वृक्ष से एक जादूगर ने एक वीणा बनायी। चीन के सम्राट ने इस वाद्ययंत्र को संभालकर रखा था और वह चाहता था कि कोई उसे बजाये पर कोई उसे बजा न सका । अंत में वीणाकारों के राजकुमार पीवो ने अपनी साधना द्वारा बजाया। सम्राट ने उससे वीणा बजाने का रहस्य पूछा तो उसने उत्तर दिया कि औरों को वीणा बजाने में सफलता इसलिए नहीं मिली कि वे सभी अपनी बात करते थे।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

मैंने वीणा में सोये हुए संगीत को जगाया, अपने-आपको भूलकर। मैं स्वयं नहीं जान सका कि मैं वाद्य यंत्र हूँ या वाद्य यंत्र मैं। असाध्य वीणा' में इस छोटी-सी कथा का इस्तेमाल एक अवधारणा की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है जो प्रतीकात्मक होने के कारण लौकिक और अलौकिक दो स्तरों पर चरितार्थ होती है। लौकिक स्तर पर किरी तरु समष्टि का प्रतीक है। अलौकिक स्तर पर वह ब्रह्म है, महामौन है जिसमें संगीत सोता है, विराट है जो आकाश से लेकर पाताल तक व्याप्त है जो नाना ध्वनियों और गतियों का साक्षी और गृहीता है। उसी से वीणा बनी है,

अतः वीणा में भी सारी गतियाँ व ध्वनियाँ हैं। वीणा व्यक्ति के भौतिक अस्तित्व का प्रतीक है। उसे वही बजा सकता है अर्थात् उसमें से संगीत की सृष्टि कर सकता है जो महामौन या ब्रह्म का साधक हो। अहंकार लेकर उसे नहीं बजाया जा सकता। पूर्ण समर्पण से ही उसे पाया जा सकता है। लौकिक अर्थ में व्यक्ति बजकर भी नहीं बजता क्योंकि बजने का अर्थ है- उस परम संगीत से झंकृत होना। इस संगीत को मौन के जरिये, साधना के जरिये, समर्पण के जरिये ही पाया जा सकता है। प्रियवद कहता है- 'राजन, पर मैं तो कलावंत साधना हूँ नहीं, शिष्य साधक हूँ। जीवन के अनकहे सत्य का साक्षी हैं।'

साधना के द्वारा जो संगीत झंकृत होता है वह इतना प्रभावशाली होता है कि सबको एक साथ प्रभावित कर देता है। सभी अपने-अपने संस्कार और आकांक्षा के अनुसार प्रभाव ग्रहण करते हैं। लौकिक स्तर पर किरी तरु उस समष्टि का प्रतीक है जिसमें विराट परंपरा और सामाजिक चेतना निहित होती है, जो हर समय की ध्वनियों, गतियों आदि को अपने में समेटती हुई गतिशील रहती है। किरी तरु केवल एक समय के बिंदु पर जीवित नहीं है, वह अनेक समयों को पार करता है, इसीलिए वह सामयिकता से निर्मित होती हुई एक सुदीर्घ परंपरा का प्रतीक बन जाता है। वीणा या कलाकृति उससे अर्थात् उसके सत्य के साक्षात्कार से निर्मित होती है। उस कलाकृति का आस्वादन उन अनुभवों का साक्षात्कार है जो समष्टि के हैं। वीणा बजाने वाला और कलाकृति का आस्वाद लेने वाला यदि अनुभवों से नहीं जुड़ता तो कलाकृति उसके लिए निर्जीव है।

कविता के अन्त में संगीतकार राजा द्वारा की गयी अपनी प्रशंसा को रोकता हुआ कहता है-

| |e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

"श्रेय नहीं कुछ मेराः
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में-
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था-
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का थाः
वह तो सब कुछ की तथता थी-
महाशून्य वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रेमय,
सब में गता है। "

वीणा वज्रकीर्ति के जीवन भर की साधना रही है। उसमें किरी तरु के अर्थात् समष्टि के सारे स्वर उसने भर दिये हैं, इसलिए उस होते हैं, इसलिए इन दोनों ही प्रकार के कवियों की धारणात्मक और संवेदनात्मक जटिलताएँ एक क्षेत्र-विशेष की होती हैं। यानि एक क्षेत्र विशेष के भीतर की धारणा और संवेदना गहनता की पहचान से उत्पन्न होती है किंतु छायावादी कवि लोक और परलोक इन दो विरोधी क्षेत्रों के बीच उलझे हुए हैं। ये कवि प्रतीकों के माध्यम से लौकिकता और अलौकिकता का ऐसा घोल तैयार करते हैं जिसमें किसी का भी चेहरा साफ दिखायी नहीं पड़ता। अज्ञेय काफी हद तक परंपरा के अनुयायी हैं। जैसे-

"कलावंत हूँ नहीं, शिष्य, साधक हूँ -
जीवन के अनकहे सत्य का साक्षी।"

| |e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

छायावादी कवियों की तरह इन्होंने भी अपनी कविताओं में ब्रह्म का नाम न लेकर भी विचित्र-विचित्र प्रतीकों से ब्रह्म की अवधारणा को अभिव्यक्त किया है और बहुत मुखर होकर महामौन का दर्शन स्थापित किया है।

'असाध्य वीणा' यदि ब्रह्म तक ही सीमित रहती तो शिकायत होती। काव्यात्मक बिंबों के माध्यम से उद्घाटित होने के कारण एक आध्यात्मिक अवधारणा अधिकप्रिय ही लगती। हम मान लेते कि कवि ब्रह्म के व्यापक रूप को इंद्रिय-बोधों, गतियों आदि के विभिन्न लौकिक बिंबों से उजागर कर हमें एक सत्व तक पहुँचा आता है। किंतु ऐसा नहीं हुआ है । यह कविता लौकिक स्तर पर भी समष्टि के रूप को चित्रित करना चाहती है और साथ ही यह कविता के रूप में भी बड़ी ही महत्त्वाकांक्षिणी प्रतीत होती है, इसलिए महत्त्वाकांक्षिणी कविता के स्तर पर इसकी पहचान होनी चाहिए। लौकिक स्तर पर समष्टि की पहचान चिड़ियों, जानवरों, वनस्पतियों आदि के परिवेश के मूर्तरूप किरी तरु की स्मृति से की गयी है। उसमें न तो मनुष्य है, न वर्तमान का संघर्ष 'असाध्य वीणा' कई दृष्टियों से अज्ञेय की प्रतिनिधि काव्य-रचना कही जा सकती है। तत्सम्-तद्भव के संधि-बिन्दु पर भाषा का रचाव, उन्मुक्त छंद-विधान और लय, सर्जन-क्षमता की गहरी व्याख्या-कवि की रचना-प्रक्रिया के ये विविध पक्ष इस लंबी कव होते हैं, इसलिए इन दोनों ही प्रकार के कवियों की धारणात्मक और संवेदनात्मक जटिलताएँ एक क्षेत्र-विशेष की होती हैं। यानि एक क्षेत्र विशेष के भीतर की धारणा और संवेदना गहनता की पहचान से उत्पन्न होती है किंतु छायावादी कवि लोक और परलोक इन दो विरोधी क्षेत्रों के बीच उलझे हुए हैं। ये कवि प्रतीकों के माध्यम से लौकिकता और अलौकिकता का ऐसा घोल तैयार करते हैं जिसमें किसी का भी चेहरा साफ दिखायी नहीं पड़ता। अज्ञेय काफी हद तक परंपरा के अनुयायी हैं। छायावादी कवियों की तरह इन्होंने भी अपनी कविताओं में ब्रह्म का नाम न लेकर भी विचित्र-विचित्र प्रतीकों से ब्रह्म की अवधारणा को अभिव्यक्त किया है और बहुत मुखर होकर महामौन का दर्शन स्थापित किया है।

'असाध्य वीणा' यदि ब्रह्म तक ही सीमित रहती तो शिकायत होती। काव्यात्मक बिंबों के माध्यम से उद्घाटित होने के कारण एक आध्यात्मिक अवधारणा अधिक प्रिय ही लगती। हम मान

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

लेते कि कवि ब्रह्म के व्यापक रूप को इंद्रिय-बोधों, गतियों आदि के विभिन्न लौकिक बिंबों से उजागर कर हमें एक सत्व तक पहुँचा आता है। किंतु ऐसा नहीं हुआ है। यह कविता लौकिक स्तर पर भी समष्टि के रूप को चित्रित करना चाहती है और साथ ही यह कविता के रूप में भी बड़ी ही महत्त्वाकांक्षिणी प्रतीत होती है, इसलिए महत्त्वाकांक्षिणी कविता के स्तर पर इसकी पहचान होनी चाहिए। लौकिक स्तर पर समष्टि की पहचान चिड़ियों, जानवरों, वनस्पतियों आदि के परिवेश के मूर्तरूप किरी तरु की स्मृति से की गयी है। उसमें न तो मनुष्य है, न वर्तमान का संघर्ष 'असाध्य वीणा' कई दृष्टियों से अज्ञेय की प्रतिनिधि काव्य-रचना कही जा सकती है। तत्सम्-तद्भव के संधि-बिन्दु पर भाषा का रचाव, उन्मुक्त छंद-विधान और लय, सर्जन-क्षमता की गहरी व्याख्या-कवि की रचना-प्रक्रिया के ये विविध पक्ष इस लंबी है। 19वीं शती के भारतीय पुनर्जागरण ने लौकिक-अलौकिक, भौतिक-आध्यात्मिक के द्वैत को जिस रूप में मिटाना आरंभ किया था, प्रसाद और निराला के काव्य में उसका अनुभव सूक्ष्मतम स्तर पर किया जा सकता है। उनकी रचनाओं ने जीवन के द्वैत को डुबोया था, 'असाध्य वीणा' में यह द्वैत रचना-प्रक्रिया में कैसे डूबता है, इसका आख्यान है। अर्थ और अनुभव का अद्वैत यो इस लंबी कविता का साध्य है। "कविता एक जापानी लोक-कथा पर आधारित कही जाती है। पर संपूर्ण रचना-क्रम में यह उतना ही गौण तथ्य है जिनता यह जानना कि 'राम की शक्ति-पूजा' का मूल वृत्त कृतिवास से लिया गया है, या कि रामचरित मानस का उपजीव्य वाल्मीकि है। वृत्त तो पत्थर है, जिसमें से रचनाकार मूर्ति तराशता है, और यों एक रचना शिल्पी ने जो मूर्ति बनाई; हो सकता है कि आगामी रचनाकारों के लिए वह प्रेरक कृति और जड़ पत्थर अलग-अलग दृष्टियों से- दोनों हो। तब वृत्त से कवि का रचना-संबंध मुख्य बात है। 'असाध्य वीणा' में सर्जन-क्षमता के माध्यम से विराट् शक्ति का अनुभावन है। रामायण अज्ञेय पर सीमित अनुभव क्षेत्र के कवि होने का आरोप बार-बार लगता रहा है। यह ठीक है कि हिंदी के भक्ति कालीन या कि छायावादी बड़े कवियों जैसे रचना-विस्तार अनुभव-कोटि और महज आकार दोनों दृष्टियों से अज्ञेय में नहीं मिलेगा। पर कविता की नयी प्रक्रिया, विस्तार और व्योरों में न जाकर अनुभव से सीधे ही टकराती है, इतिहास की अनुभूति क्षण में समेट लेना चाहती है, और क्षण को इतिहास-व्यापी बनाने की महत्त्वाकांक्षा रखती है। 'असाध्य वीणा' ऐसे ही क्षण की अनुभूति को

| |e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

काल में परिव्याप्त कर देना चाहती है। यह क्षण कलाकार की रचना का क्षण है, जो देश-काल में स्थित होकर भी उनका अतिक्रमण कर जाता है। यह रचना-क्षण परम शक्ति या कि चरम यथार्थ का अनुभावन और आख्यान है। जैसे-

"भूल गया था केशकंबली राज सभा को
कंबल पर आंमत्रित एक अकेलेपन में डूब गया था
जिसमें साक्षी के आगे था
जीवित वही किरीटी-तरू..''

प्रकृति-जीवन का यह वैविध्य जड़ समझे जाने वाले किरी-तरु ने अपने में समोकर रखा है, और उसी में से वज्रकीर्ति ने इस वीणा को गढ़ा था। यह जीवन- वैविध्य वीणा में कैसे रूपांतरित होकर झंकृत होता है, इसका वर्णन कवि रचना के अगले खंड में करता है। अनुभावन और अभिव्यक्ति की यह समष्टि ग्रहण करने की चुनौती जैसे केशकंबली के लिए थी, वैसे ही आज के रचनाकार के समक्ष है। प्रकृति के विविध अनुभवों की झंकार मनुष्य में होती है, यह जैसे इस समीकरण की प्रकृति-जीवन के इस व्यापक चित्रण में संस्कृत साहित्य-परंपरा और देसी-जीवन, तत्सम का आभिजात्य और तद्भव की आत्मीयता, शिष्ट और लोक एक दूसरे में घुल-मिल रहे हैं। 'पल्लवन-पतझरों,' 'वर्षा-बूंदों', 'उत्सव-ढोलक' की समास-प्रक्रिया जैसे इस तथ्य को प्रतीक रूप में प्रतिफलित करती है। इस संश्लेष में भी कवि निष्ठा का आधार लोक-जीवन को ही बनाना चाहता है' 'ठेका', 'फुरकन', 'चाप', 'छलाँग', 'टाप', 'खुर' और 'थाप' जैसे क्रियावाची प्रयोग कवि की इस वृत्ति को रेखांकित करते हैं। तद्भवता की ओर झुकाव जो संज्ञा शब्दों से आरंभ होता है, अब क्रिया के सूक्ष्म रूपों में पहुँच गया है। कुल मिलाकर दृश्यालेख सामान्य प्राकृतिक एवं जन-जीवन को उभारता है।

वस्तुतः कह सकते है कि अज्ञेय की कृति 'असाध्य वीणा' जीवन का प्रतीक है, हर व्यक्ति को अपनी भावना के अनुरूप ही उसकी स्वर लहरी प्रतीत होती है। व्यक्ति को अपनी भावना के

| |e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201072 |

अनुरूप ही सत्य की उपलब्धि होती है तथा भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को कला की प्रतीति भिन्न-भिन्न रूप में इसलिए होती है, क्योकि उनकी आन्तरिक भावनाओं में भिन्नता होती है। इससे यह भी ध्वनित होता है कि कला की विशिष्टता उसके अलग-अलग सन्दर्भों में , अलग-अलग अर्थो में होती है।

सन्दर्भ-सूची

1. एम. एस. द धुनीकार, प्रसाद, साहित्य का मनोविश्लेषाणात्मक अध्ययन, पृष्ठ संख्या - 38
2. एम. एस. द धुनीकार, प्रसाद, साहित्य का मनोविश्लेषाणात्मक अध्ययन, पृष्ठ संख्या - 42
3. वर्ड अरिजिंस 1990 के शब्दकोश
4. एम. एस. द धुनीकार, प्रसाद, साहित्य का मनोविश्लेषाणात्मक अध्ययन, पृष्ठ संख्या - 51
5. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यन' अज्ञेय, असाध्य वीणा, पृष्ठ संख्या-111
6. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यन' अज्ञेय, असाध्य वीणा, पृष्ठ संख्या-120-121
7. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यन' अज्ञेय, असाध्य वीणा, पृष्ठ संख्या-111
8. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यन' अज्ञेय, असाध्य वीणा, पृष्ठ संख्या-112

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

ISSN
INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details